कहानियों द्वारा बच्चों के भाषायी कौशल्य का विकास

नवोपक्रम

(2006-08)

नाम : शुभांगी तानाजी तावरे

पाठशाला का नाम :

कमला निंबकर बालभवन

फलटण.

शीर्षक : कहानी द्वारा बच्चों के भाषायी-
कौशल का विकास

एक था राजा, एक थी रानी,
दादी माँ सुना, एक अच्छी-सी कहानी।

छोटे बच्चोंकेकहानियाँ सुनना पढ़ना बेहद पसंद आता है। कहानियाँ यह बालचिंतन का उदात्त भावनाओं और आकांक्षाओं का जीवनदायी स्त्रोत है। बच्चों में कहानियाँ सौंदर्य की भावना विकसित करती है। सुनने में रूचि बच्चों के भाषायी कौशल में मदद तो पहुँचाती है, आनंद, रोमांच कौतूहल भी पैदा करती है। साथही अच्छी आदतों को ग्रहण भी करते है।

हिंदी में कई लेखको ने मनोरंजन, ज्ञान, मूल्यों, संस्कारों पर आधारित कहानियाँ लिखी हैं। पर सारें बच्चें रूचि लेकर, जिज्ञासावश कहानी

की किताबें पढ़े ऐसा जरूरी नही हैं। कहानी की किताब पढ़ने में मजा, आनंद, उत्साह लगना यह जरूरी है अक्सर सुनाई जानेवाली कहानियाँ किसी मूल्य, नैतिकता का उपदेश की वाहक ही बनती है। क्या बच्चें कहानी इन्ही मूल्यों, सीख उपदेशों या नैतिक संदेश को ग्रहण करने केलिए सुनते है या अपने मनोरंजन और दृष्टि विस्तार के लिए? हाँ अपने आप बोध ले सके यह अच्छा है पर सिर्फ बोध के लिए कहानी सुनाना या पढ़ने देना यह उचित नही है। बच्चों के लिए कहानियों को सुनना-सुनाना इस प्रकार का हो जो बच्चों को कहानी से जुड़ने का मौका दे। स्वयं सोचने का, कल्पना करने का मौका दे। इस प्रकार से सुनकर, पढ़कर उनमें लिखित क्षमता क. विकास भी ~~विकास~~ होना स्वाभाविक ही है।

इस उपक्रम द्वारा बच्चों को स्वतंत्र

वातावरण में अर्थात जिसे कक्षा में जहाँ बैठना है वहाँ बिठाया, कुछ बच्चें मेरे साथ नीचे बैठे तो दो-तीन कुर्सी पर बैठे थे। उन्हें कहानियाँ सुनाई, बाद में दूसरी कहानी की किताबें पढ़ने कही बाद में कहानी को नाटक रूप में लिखने कहा फिर समूह में काम बाँटा। पूरक दूसरी किताबें पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया ताकि उनकी श्रवण, वाचन, लेखन क्षमता बढ़े।

दूसरी बात यह कि कहानी तन्मय होकर धाराप्रवाह रूप में हाव-भाव से सुनाए। यदि कहानी से संबंधित बड़े चित्र हो तो वे सुनते समय तन्मय होंगे, समरस होंगे। एक बात महत्वपूर्ण है कि कहानी सुनते समय कड़क बंधन न हो। देखा गया है कि बच्चों को (इस उपक्रम में) किताबें देकर उस पर कुछ प्रश्न, शब्द लिखने के लिए दिए तो उन्होनें समूह में मिलकर जिम्मेदारीपूर्ण और

उत्साह से काम किया।

अतः सबसे महत्वपूर्ण कि इस तरह से उपक्रम लेने से बच्चा पुराने ढर्रे से हटकर मतलब पाठ पढ़ो, स्वाध्याय लिखो बस यह न होकर कुछ कहानियों को पढ़कर, सुनकर, सुनाकर आदि इस जैसे विभिन्न तरीकों से आस्वाद लेकर उस पर आधारित महत्वपूर्ण गतिविधियों को जैसे नाटक रूप में करना, पहेली, समूहकाम आदि उत्साह से जिम्मेदारीपूर्ण करता है। इस तरह बच्चा सक्रिय अभिकर्ता (active agent) बनता है। सुंदर रूप से भागिदारी निभाता है।

मैंने यह विषय क्यों चुना? और विषय की तैयारी –

बच्चें मराठी की कहानी की किताबें मन लगाकर पढ़ते थे। मराठी मातृभाषा होने से यह स्वाभाविक हैं। पर हिंदी द्वितीय भाषा होने से

हिंदी की किताबों जिनमें कहानी, कविता, पहेली थी उनका आकर्षण जरा कम ही दिखा। हिंदी की अन्य किताबों में वह रूचि ले उनका हिंदी भाषा का विकास हो, शब्द भंडार बढ़े, हिंदी में बात करते समय अटके नही, झिझक कम हो, मन का भय दूर होकर आत्मविश्वासपूर्वक वह बोले अतः उनकी भाषा क्षमता विकसित करने के लिए मैंने यह विषय चुना। वैसे वे दूरदर्शन, रेडियो आदि पर हिंदी सुनते है लेकिन धाराप्रवाह हिंदी पढ़ना, बोलना, मन की बात व्यक्त करना और प्रभावी हिंदी लेखन के लिए वाचन, श्रवण बहुत जरूरी था। जिससे उनकी सोच कल्पनाशीलता का दायरा बढ़ेगा।

कहानी सुनते समय बच्चों के चेहरे के बदलते भाव बताते है कि उन्हें मजा आ रहा है या नही। साथ ही मौखिक भाषा से लिखित

भाषा की ओर वे आत्मविश्वासपूर्वक जाएँगे।

हिंदी में कहानी सुनाने के लिए कौन उत्सुक है? ऐसा पूछा तो हमेशा कहानी सुनाने वाले तीन--चार बच्चों के ही हाथ ऊपर होते थे। बाकि बच्चों को लगता था कि पिछली बार मैंने कहानी सुनाई थी तब बीच-बीच में मराठी के शब्द आए थे और सहपाठियों ने हँसी .मजाक भी उड़ाया था इस बार भी कहानी सुनाते समय यदि ऐसा हुआ तो बाई क्या बोलेंगी? डर के मारे कुछ न बोलना, चुपचाप बैठना ही अच्छा है इसलिए भी वे (पढ़ाई में खासतौर पर हिंदी में कमजोर बच्चे) चर्चा करने, कहानी बताने या हिंदी में अपना मत व्यक्त नही करते थे।

कक्षा 5 वीं में हिंदी विषय की प्रारंभिक जानकारी होती है। कक्षा 6ठी में पाठ, व्याकरण का ज्यादा भाग होता है। उसे हिंदी शब्दों

की ज्यादा जानकारी नही होती है। मातृभाषा मराठी होने से हिंदी के घंटे में भी मराठी में वे आपस में बात करते नजर आते। हिंदी शब्दों का भंडार बढ़ाने के लिए भी मैंने यह विषय चुनना योग्य समझा।

इस उपक्रम के लिए छठी के छात्रों को जो ११-१२ साल के आयु समूह के हैं को लिया क्योंकि इस आयु के बच्चें संस्कारक्षम होते है इसलिए उनमें देशप्रेम, ईमानदारी, अंधश्रद्धा, परिश्रम, वृक्षारोपण का महत्व, सहासी कथा आदि विषयों पर आधारित कहानियों के माध्यम से योग्य संस्कार प्रेम, आदर, सामाजिक उत्तरदायित्व, हक आदि के बारें में सजगता बढ़ाना था। ऐसी अनेक संस्कार-क्षम कहानियों का भरण-पोषण किया तो हिंदी भाषा का और नैतिक मूल्यों का विकास होगा ही साथ बच्चों की एकाग्रता में आमुलाग्र बदल भी दिखेगा।

मैंने कक्षा छठीं के बच्चों के मानसिक स्तर के अनुकूल कहानी की किताबों को चुना जिसमें भाषा शैली , शब्दों का स्तर आदि बातों को ध्यान में रखा साथ ही छोटी-छोटी कहानियाँ बच्चों को पढ़ने के लिए और बड़ी कहानी की किताबें पढ़-कर सुनाने के लिए अलग रखी। वाचनालय से ग्रंथपाल द्वारा वह मेरे नाम करने के लिए अनुमति मांगी। 'मीना चली स्कूल' यह चित्रात्मक बड़ी किताब कक्षा में हिंदी के घंटे में लगेगी' इसकी पूर्वकल्पना भी दी। बच्चों से भी कहा गया कि वे अपने माता-पिता को बताये कि कक्षा में कुछ घंटे कहानी पर उपक्रम चालू होनेवाला है।उसके लिए है व शब्दकोष बनाने के लिए कागज लगेंगे। और नाटक में भी हम भाग ले रहे है। आदि

प्रसिद्ध भाषा विशेषज्ञों जिनमें ताराबाई मोड़क ''गिजूभाई बधेरा' कृष्णकुमार शर्मा'

आदि के बाल साहित्य पर आए लेख जो कि कुछ मराठी में तो कुछ हिंदी में थे वह पढ़े। समझे।

हिंदी भाषा के विकास के लिए एवं लिखित भाषा पर अधिकार के लिए प्रयत्न विभिन्न क्रिया-कलापों एवं अभ्यासों के माध्यम से आरंभ से ही साथ-साथ चलने चाहिए। अतः कहानी की किताबें पढ़ना, पढ़ने में आनंद लेना एवं पढ़े हुए पर विचार और फिर पढ़ा हुआ लिखकर अभि-व्यक्त करना यह बहुत आवश्यक है।

कहानी सुनते समय वे ध्यानपूर्वक सुनते है कहीं-कहीं हिंदी के कठिन शब्दों का अर्थ लगाते हुए कहानी समझ भी लेते है पर एकाद जगह यदि उन्हें कहानी में आया कठिन शब्द समझा नही तो उनका मजा किरकिरा हो जाता है उदाहरणार्थ-दानी पेड कहानी सुनाते समय एक बच्चें को 'ठूँठ' शब्द समझा नही। और वह वही पर अटक गया।

कहानी पूरी होने पर कुछ बच्चों ने पूछा 'बाई टूँठ मतलब क्या?' इस जैसे शब्द का अर्थ न मालूम होना स्वाभाविक है पर कुछ संकोचीवृत्ती के बच्चों को लगा कि कैसे अर्थ पूछे। कहानी सुनते समय उन बच्चों को शायद ही मजा आया होगा। इसलिए इस पर गौर किया और उन बच्चों का सक्रिय सहभाग हो इसके लिए अलग-अलग योजना बनाई, नाटक करवाएँ, डायलॉग (संवाद) याद करने के लिए कहे। कहानी के संवाद पात्र अनुसार अलग कार्डशीट के चौकोन कार्ड पर लिखकर रखे कुछ कार्ड कोरे रखे ताकि बच्चों से उसपर लिखवा सकें।

कुछ कहानियों का नाट्यीकरण कैसे होगा यह सोचकर रखा। एक कहानी पढकर सुनाई। उनसे विचार-विमर्श किया सभी ने कहा कि इसे हम नाटक के रूप में लिखकर इसे प्रस्तुत करेंगे। कैसे नाटक शुरु करे? नाटकका

अंत कैसे करे ? कौन-से संवाद कौन बोलेगा आदि देखते-ही-देखते नाटक तैयार हुआ। जिनकी अभिनय क्षमता, उच्चार अच्छे उन्हें मुख्य भाग और जो (डरपोक) मंच पर आकर हिंदी में बोलने में कतराते उन्हें छोटी-छोटी भूमिका दी। कुछ बच्चों को रंगमंच सज्जा, प्रकाश सज्जा का काम बाँटा।

इंग्रजी, मराठी, हिंदी शब्दकोष यदि घर में है, तो लाने के लिए कहा गया था। ताकि शब्दकोष (Dictionary) बनाते समय उसकी भी मदद ले सके।

यह विषय चुनने का एक कारण यह भी है कि बच्चों पर पढ़ाई का बहुत बोझ होता है। इस उम्र के बच्चों को (खासतौर पर इस बार की छठी कक्षा के बच्चे बहुत चंचल है) एक जगह बैठकर काम करना, पढ़ना अच्छा नही लगता है इसलिए कक्षा से बाहर क्रिडांगण में पेड़ के

नीचे , प्रार्थना हॉल में समूह बनाकर शब्दकोष तैयार करने का काम दिया। नाट्यीकरण की योजना, अभ्यास कराने का सोचा। कुछ कहानियों की कुछ मन की सिर्फ दो पंक्तियाँ लिखकर संच तैयार किया ताकि कक्षा में तुरंत सभी को वह मिले। इन दो पंक्तियों को पढ़कर उसपर मन की कहानी लिखवानी थी।

इससे किस प्रकार के बदल अपेक्षित है?

पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों की सहायता से, कहानियाँ सुनाकर ली गई शिक्षा आनंददायी शिक्षा होगी क्योंकि इससे बच्चों की एकाग्रता बढ़ेगी, श्रवण क्षमता, वाचन क्षमता विकसित होगी। बालमन पर इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा। संकोचीवृत्ती दूर होगी एवं आत्मविश्वास भी बढ़ेगा।

इसके साथ ही निम्नलिखित बदल विद्यार्थियों में जरूर होंगे -

इस उपक्रम के बाद बच्चें भी कहानियाँ सुनाने का प्रयत्न करेंगे।

'कबरी बिल्ली' प्रेमचंद लिखित यह कहानी सुनाते समय बहू से बिल्ली को जोरदार मार पडती है बहू 'सील-बट्टे' का बट्टा उसे फेंककर मारती है, लोगों को पंडितजी को मालूम पड़ने पर वह सोने

की बिल्ली दान करने कहते हैं ताकि वह प्रायश्चित कर पाप से मुक्त हो सकें। इस कहानी के दौरान हम बच्चों से तुम्हें और कौन-कौन-सी अंधश्रद्धा मालूम है ? यह पूछने पर वह मजेदार बातें बताएँगे इस प्रकार वार्तालाप से सभी सहभागी होंगे इससे संकोचीवृत्ती के बच्चे भी समूह में बोलेंगे। यदि एकाद बच्चा नही भी बता रहा हो तो उसे भी अगले दिन अपने बड़ो, बुजुर्गो से पूछकर आने कहना व कक्षा मेंसुनाने के लिए कहना।

'तेजिंदर' कहानी को नाटक रूप में लिखते समय संवाद याद करने का काम बाँटा जा रहा था वो पढ़ाई में पीछे, हिंदी में कमजोर बच्चे 'बाई - बाई हमें भी नाटक में छोटा-सी भूमिका करना है। प्रकाश सज्जा कोई दूसरे को दीजिए कहने लगे। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ और खुशी भी। मैंने पूछा "कहो तुम नाटक में कहाँ

और क्या संवाद बोलोगे। उन्होनें सुझाया कि हम दुकानदार बनेंगे या रेल्वेस्टेशन पर जहाँ पर तेजिंदर मूँगफली बेचता है उसके एक तरफ खिलौने बेचनेवाला या कुली बनेंगे। आदि। इस तरह उनके आत्मविश्वास बढ़ने में योग्य दिशा मिली।

- वे जिम्मेदारी से अपनी बारी की राह देखेंगे।
- मदद, सहकारवृत्ती बढ़ेगी।
- अपना काम अच्छा हो इस ओर प्रयत्नशील रहेंगे दूसरों से अपनी तुलना करेंगे यदि कुछ गलतियाँ होती है, तो उसे सुधारने का प्रयत्न भी करेंगे।
- शब्दभंडार बढ़ाने के लिए जब उन्हें शब्दकोष से शब्द ढूँढना, लिखना यदि नहीं आ रहा है, तो सहपाठी से सलाह-मसलत कर लिखना आदि काम करते समय विचारपूर्वक, मनोरंजन रूप से किया हुआ अध्ययन उत्साहदायी होगा। किया काम मन में

बसेगा और दीर्घकाल तक टीकेगा।

- सिर्फ पाठ्यपुस्तक का अध्ययन करना वह उन्हें नीरस लगेगा। इस प्रकार कहानी की किताबों से उनके ज्ञान में भी बढौतरी होगी।
- समूह में काम करते समय यदि कोई समूह पीछे रह गया होगा तो वह किसी भी तरह समय निकालकर, मदद माँगकर बराबरी में आने का प्रयत्न करेगा।
- वाचनालय का उपयोग करेंगे।

इस प्रकार बच्चों में आमुलाग्र बदल होगा। अतिरिक्त वाचन के प्रति रूचि भी निर्माण होगी।

मेरे उपक्रम की विशेषता क्या है ?

कहानियाँ बच्चों में सौंदर्य की भावना विकसित करती है। कहानी की बदौलत बच्चे न केवल मस्तिष्क से बल्कि ह्रदय से भी संसार को जान्ते समझते है। और न केवल जानते-समझते ही नही बल्कि चारों ओर के संसार की घटनाओं पर प्रतिक्रिया भी देते है। उन्हें भलाई- बुराईबाली बातें समझ आती है। कहानियों से ही बच्चें पहली बार न्याय- अन्याय, बुराई का फल बुरा होता है आदि बातें सुनते - समझते है। इस तरह कहानियाँ मूल्य, विकसित करने के लिए अद्वितीय साधन है।

हिंदी के घंटे में कहानियाँ सुनना एक विशेष आकर्षण होता है। जब जिम कार्बेट द्वारा लिखित सच्ची घटना 'रूद्रप्रयाग का नरभक्षक चित्ता' सुना रही थी तब बच्चें वह सारे प्रसंग

एकाग्रता से सुन रहे थे उसके एक प्रसंग में चित्ता 12-13 साल के गडरिए के बेटे को जो कि बकरियाँ चराकर थकाहारा, एक छोटे-से कमरे में बकरियों के ही साथ सो रहा था उसे उठाकर ले जाकर मार डालता है। यह सब सुनते समय बच्चे दुखी होते है। दुष्ट चित्ते का बड़ी चालाकी से सारवली निकालकर अंदर आना भोले-भाले लड़के को उठा ले जाना आदि उनकी कल्पना में सजीव हो उठता है।

जब दूसरा प्रसंग उन्हें सुनाया कि रूद्रप्रयाग गाँव में अनेक लोगों को खाने के बाद जिम कार्बेट जैसे शिकारी को बुलाया। शिकारी ने गाँव का सर्वेक्षण किया कई-कई रात पेड़ पर बैठकर बिताए कई बार वह चित्ता गोली से बचा तो कभी चलाखी से। अतः एक विशिष्ट प्रकार का जाला जिसमें कड़ी होती है वह मँगाया

जाले को बिछाने पर जिम कार्बेट पेड़ पर बैठा। तीसरे दिन चिता आया और उस जाले में आगे के दोनों पैर फँसे। वह विशिष्ट प्रकार की कड़ी में पैर बंद हुए और मौके की तलाश में बैठा जिम कार्बेट गोली का निशाना लगाता है।(आगे क्या हुआ अब कल सुनेंगे) बीच में ही कहानी रोकने से सारे बच्चे आगे क्या हुआ? बताइएँ न! क्या वह चिता मर गया ना? शायद वह पकड़ा गया होगा? अपनी-अपनी सोच सोचते। दूसरे दिन का वह कहानी सुनने के लिए बड़ी बेसब्री से इंतजार करते! अपने घरवालों को भी प्रसंग सुनाते।

दूसरे दिन जब उन्हें बताया गया कि वह गोली का निशाना बराबर कड़ी पर लगा कड़ी टूटी और वह भाग निकला। तो बच्चों के हव-भाव, प्रतिक्रिया देखने जैसी थी। वे आगे क्या

हुआ इसका अंदाज बाँधने लगते थे। कई बच्चे साँसे रोके कथा-कहानी सुनते थे। कई प्रसंग तो जितनी बार बच्चों ने सुनाने के लिए कहा उतनी बार सुनाए। प्रसिद्ध बाल साहित्य विशेषज्ञ के अनुसार एकाद प्रसंग बच्चे बार-बार सुनना चाहे तो वह बार-बार सुनाए। इसका उल्लेख उन्होंने 'गोष्टी सांगणाऱ्यांसाठी चार गोष्टी' इस किताब में किया है। बच्चों का यह कहानी सुनने का आकर्षण मेरे लिए अमूल्य उपहार थे।

इसी प्रकार 'प्याज की शॉल', 'पंचतंत्र की कहानियाँ', 'टपका', 'दो बैलों की जोडी' यह सुनाई। कहानी सुनने-सुनाने की भाँति पढ़ना, कहानी लिखना बच्चों में नेक मानवीय भावनाएँ जगाने उन्हें विवेकशील बनाने का सशक्त साधन था।

अलग - अलग गतिविधियों द्वारा , परीक्षण और पूरक जानकारी उदाहरणार्थ दूसरी अन्य किताब में कि जिम कार्बेट पशु-पक्षियों की आवाज हुबहू निकालता था। इस प्रकार जानकारी इकट्ठा की। जब बच्चें अपने घरवालें को मित्रों को यह प्रसंग सुनाते तो दूसरे दिन उनसे मैं घरवालें की प्रतिक्रिया क्या थी ? यह पूछती मेरा उद्देश्य उनसे हिंदी में उत्तर निकालना होता था।

समूह कार्य करते समय , शब्दकोष बनाते समय सभी अपने काम में मग्न रहते देखे गए। 'मीना चली स्कूल' यह चित्रमय बड़ी किताब जैसी दूसरी किताबें वाचनालय से लाकर सुनाने का आग्रह रहता।

इस प्रकार पढ़ाई में कुछ कच्चे पड़े बच्चों से लेकर होशियार बच्चों तक सभी का उत्साहपूर्ण सहभाग इस उपक्रम की विशेषता है।

उपक्रम के उददेश्य -

१. १) विदयार्थियों में कहानी के प्रति रूचि बढाना ।

२. २) मनोरंजनात्मक तरीके से हिंदी भाषा का विकास

३. ३) कहानी में आए कठिन शब्दो के अर्थ एवं उनका अंग्रेजी, मराठी में अर्थ लिखवाना जिससें शब्द भंडार में वृदधि हो।

४. ४) छोटी कहानियों को नाटक रूप में लिखना ।

५. ५) कहानी को आगे बढ़ाना या मन से नई कहानी बनाना उसे हावभाव के साथ व्यक्त कराना।

६. ६) समूह में काम करना

७. ७) श्रवण, लेखन, वाचन कौशल बढ़ाना ।

८. ८) कहानी का नाट्यीकरण में संवाद, नई घटनाएँ जोड़ना । बिना डरे भागीदार हो इस ओर प्रयत्न करना ।

९) छात्रों के सुप्त गुण प्रकाश में लाना ।

१०) पूरक कहानियाँ इकट्ठा कर विभिन्न शब्द खेल

नाटक , पहेली जैसी गतिविधियाँ लेना और शब्दकोष बनवाना ।

सामाजिक समस्याओं परक , प्रकृति प्रेम , विभिन्न मूल्यों पर आधारीत कहानियाँ सुनाकर देशप्रेम , प्रकृतिप्रेम आदि बढ़ाना ।

सामाजिक बुराईयाँ , सामाजिक अच्छाईयों के प्रति जागरूक करना ।

स्वतंत्र और आनंददायी वातावरण रखना ।

समूह में काम करवाना । मार्गदर्शन और प्रोत्साहन देकर आत्मविश्वास बढ़ाना ।

सोच और कल्पनाशीलता का दायरा बढ़ाना ।

कहानी पढ़ते , सुनते समय या उसपर आधारित गतिविधियों को करते समय उनको मजा आ रहा है या नही यह जानना ।

मेरे उपक्रम से किसे क्या-क्या साध्य होगा? कैसे? -

मेरे उपक्रम के लिए कक्षा छठी के विद्यार्थी है। कक्षा ५, ६, ७ के विद्यार्थी इसका लाभ लेंगे। पढ़ाई में कमजोर, शरारती, शर्मिले, संकोची स्वभाव के बच्चों को साथ ही पढ़ाई में आगे रहनेवाले बच्चों को भी फायदा होगा। इनके साथ ही संस्कारक्षम आयुवाले, पढ़ाई में पीछे पड़े बच्चों को योग्य दिशा, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन दिया तो वे कठिन लगने वाले भाग को दिलचस्प बनाने की तकनीक आत्मसात करेंगे। उदाहरणार्थ चिते की कहानी सुनाते समय उन्हे कहा कि 'देवळातला वाघ' यह मराठी कथा की किताब वाचनालय में है उसे पढ़कर एक-एक पन्ना रोज हिंदी में सुनाना। स्वयंअध्ययन द्वारा वह काम अच्छी तरह निभाया।

हमेशा पाठ्यक्रम के भाग से हटकर, नाक की सीध में पढ़ने वाली पद्धति से अलग अपने बच्चों को

उत्साहपूर्वक ज्ञान बढ़ाने जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी कुशलतापूर्वक कर रहे है यह देखकर जान-कर अभिभावक भी बहुत खुश होंगे। अन्य विषयों के अध्ययन की प्रगति भी दिखेगी ही।

कक्षा के २०% प्रज्ञावान विद्यार्थी ६०% मध्यम स्तर के और बाकी बचे २०% पढ़ाई में पीछे पड़े विद्यार्थी ऐसी अलग-अलग क्षमताओं के छात्र इस रीति से हिंदी पढ़ने पर आनंदीत, उत्साही और ज्यादा होशियार होंगे।

कार्यवाही -

यह उपक्रम शुरू करने से पहले मैंने मुख्याध्यापिका से इस विषय में चर्चा की। मेरा विषय बताया और यह भी बताया कि छठी कक्षा को इस उपक्रम के लिए चुना है। मेरा उद्देश्य बच्चों का हिंदी विषय में कहानियों द्वारा ज्ञान बढ़ाना, भाषायी कौशल विकसित करना है। इसमें ईमानदारी पर, रोमांचकारी कहानियाँ, सहकारवृत्ती

अंधश्रद्धा आदि पर आधारित कहानियाँ ली। इस उपक्रम के लिए लगनेवाला समय, होनेवाला खर्च अन्य अध्यापकों, विद्यार्थियों की मदद आदि के बारें में उनसे अनुमति ली। पाठशाला की ग्रंथपाल उनसे लगनेवाली किताबें के लिए सहमति ली।

इस उपक्रम के माध्यम से मेरा आशय यह है कि बच्चों को सिर्फ पाठ्यपुस्तकीय कीड़ा न बना कर और सिर्फ पाठ के प्रश्न एक वाक्य, दीर्घोत्तरी, रिक्त स्थान जैसे ही प्रश्न न देकर ऐसे प्रश्न पूछने का काम करना था जिससे वे मन से, कल्पनाशक्ति से अपनी बात बताएँ। जैसे मैंने (छमाही में 1) यदि लड्डू तुम्हारें पास मदद के लिए आता तो तुम क्या करते?

2) गाँव में एक बरगद का पेड़ था रात हुई कि माँ राजू को वहाँ जाने न देती पर एक दिन ---- (कहानी बनाओ)

इस तरह अलग-२ रूप से प्र॰ देकर रचनात्मकता बढ़ती है। न कि पाठों में उत्तरों को कोष्ठक में रखकर याद करके रह जाना।

कार्य शुरू करते समय १०-१५ दिन पहले मैंने विषय चुना, उससे संबंधित शिक्षा विशेषज्ञों के जैसे ताराबाई मोडक, गिजूभाई बधेरा, कृष्णकांत शर्मा के विचार पढ़े समझे। कहानियों की ३०-३२ किताबें आयुसमूहानुसार छाँटी किताबों की सूची बनाई कि कौन-कौन-सी पढ़कर और कौन-कौन-सी पढ़ने देनी है इसमें निम्न लिखित थी-

१. नाव चली	८ रावीपार (प्रसंग कुछ ही)
२ आओ बने ईमानदार	९ तेजिंदर
३ प्याज की शॉल	१० टपका
४ रहीम और करीम	११ रूद्रप्रयाग का नरभक्षक चित्ता
५ दानी पेड़	१२ तुम मेरी अम्मा हो?
६ सुनो सबकी करो मन की	१३ वनराज से मुलाकात
७ चूहे की शादी	१४ क्या तुम मेरी अम्मा हो?

बाँसुरीवाला
चटनी

पहले छोटी कहानियाँ सुनाई। चकमक पत्रिका की एक कहानी तेजिंदर बहुत पसंद आयी इस कहानी में 12-13 साल का सिख (पंजाबी) लड़का रेल्वेस्टेशन पर मूँगफली बेचता है आज उसे अपनी माँ के लिए चुड़ियाँ ले जानी है। अचानक दंगल क्योंकि प्रधानमंत्री की हत्या एकसिख अंगरक्षक ने की ऐसी घोषणा हुई। सारी दूकाने बंद पर तेजिंदर बैठा रहा पैसे कमाने की आशामें थोडी देर में तेजिंदर को मारने लाठीधारी आते है। तेजिंदर बचता-बचाता भागता है। घर की पहुँचने पर वहाँ धुए और राख के सिवाय कुछ नही होता है वह किसी तरह अपने घर की जमीन पहचानता है राख में उसे कुछ चमकता-सा दिखता है वह उसे उठाकर देखता है, तो उसकी माँ की पहनी हुई चुड़ी होती है। वह फुट-फुटकर रोते-रोते वही बैठकर सिसकियाँ देता है सुबह मुर्गे की बाँग होती है पीछे से सेठ जी की लड़की जो 10-11 साल की है कँधे पर हाथ रखकर गुड़िया देती है और

कहती है जब मेरी माँ भगवान के पास गई थी तब पिताजी ने मुझे दी मेरी देखभाल करने। अब तुम इसे अपने पास रखो और हाँ चलो हमारे यहाँ इस तरह वह मासूम को वह छोटी-सी बच्ची सहारा देती है।

कहानी सुनकर बच्चों के मन में आया होगा उस तेजिंदर का क्या कसूर? क्या इस तरह हिंसा करना योग्य है। कुछ बच्चों ने कहा कि इसे हम नाटक रूप में करें क्या? फिर उनके समूह बाँटकर संवाद लेखन करने कहा। , रंगसज्जा का काम बाँटा गया। नाट्यीकरण में पढ़ाई में पीछे पड़े और जिनकी हिंदी टूटी-फूटी थी आग्रह कर रहे थे कि हमें भूमिका दे उन्हें दुकानदार बनाया। कुछ को प्रकाश व्यवस्था दी उनसे कहा तुम तकनीकी विभाग संभालो। 'प्याज की शॉल' इस नाटक में भी प्याज बनी लड़की पर सारी सब्जियाँ जैसे आलू बैंगन, टमाटर हँसते है कहते है प्याज तुमसे अच्छे तो हम है प्याज कहती है इसका फैसला तो प्रकृतिदेवी के

पास चलकर ही करते है जब वे (नाटक में) सबसे अच्छे हम सबसे बड़े हम' ऐसा कहकर जाते है उस समय रंगमंच पर सफेद कपड़े का परदा लगाया था परदे पर पीछे से एक बल्ब जलाया। उस प्रकाश में परदे के पीछे से ही ४ गमले के पौधे को इस तरह धीरे-धीरे दूसरी तरफ ले जा रहे थे कि ऐसा लग रहा था कि सारी की सारी सब्जियाँ घने-घने जंगल से जा रही है। सारे बच्चों ने नाटक अच्छी तरह किया।

इस प्रकार प्रयोग करने से बच्चों को विशेष आकर्षण लगता है। नाट्यीकरण करते समय भी जिसे जो भूमिका मिली थी उसके संवाद कैसे बोलना? कैसे चलना? बैठना? हावभाव, किधर से आना, किधर से वापस जाना आदि काम तत्पर होकर सीख रहे थे वह भी अनुशासन के साथ।

एक बात ध्यान देने वाली है कि वे एक तरीके से नही समझ रहे है, तो तुरंत दूसरा तरीका

अपनाना चाहिए। हमें हर समय सक्रिय (Active) रहना जरूरी है।

समूहनुसार काम खत्म होने पर हमने विश्लेषण किया कि आज क्या गलत हुआ, कहाँ हमें इस तरह से बदल करना चाहिए आदि। तेजिंदर नाटक में माँ की मृत्यु पर कैसे रोना, सिसकियाँ लेना, आँसू पोंछना आदि स्वयं करके बताया इसका निरीक्षण सभी से करने के लिए कहा। बच्चों को उत्साहित करना बहुत जरूरी है। हिंदी दिवस पर यह नाटक किया सभी देखनेवालो पर इसकी जबरदस्त छाप पड़ी।

इसके बाद अगले सप्ताह हमने पिछले महीने जो कहानी सुनाई थी उसका परीक्षण लेने का सोचा। बच्चों के ४-४ के समूह बनाए। कहा तुम्हें सुनाई कहानी की किताबें बंद रखो और प्रश्न दिए थे जिसमें कहानी का उद्देश, बोध क्या मिला, सारांश आदि लिखने के लिए था हालाँकि प्रसिद्ध बाल लेखिका तारा बाई मोडक

के अनुसार कहानी सुनाने पर बच्चों से कहानी से क्या सीख मिली या वही कहानी फिर से बच्चें को सुनाने के लिए कहना योग्य नही इसलिए सिर्फ १ ही कहानी का परीक्षण करने का ठहराया क्योंकि उनको जो-जो कहानी सुनाई जा रही थी वह सुनकर याद है या नही यह देखना इस परीक्षण का उद्देश था। इसमें बच्चें पूछी बातें विचारपूर्वक लिखते नजर आए। फिर उस कहानी में आए २०-२५ शब्द को मराठी, इंग्रजी में क्या कहते है वह लिखने कहा। (प्रत संलग्न)

इस प्रकार धीरे-धीरे एक-एक गतिविधियाँ बढ़ाने से वे मिलजुल काम करते थे कमजोर बच्चें भी समूह में बिना डरे काम करेंगे, पूछकर लिखेंगे उनके द्वारा लिखना चाहे वह पूछकर, देखकर लिखे यह काम महत्वपूर्ण है उन बच्चों को भी सबकी बराबरी से काम पूरा हुआ इसका आनंद होगा।

पूरक कहानियाँ इकट्ठा करना- पूरक कहानियाँ सुनाते

समय उनसे अर्थ पूछना, प्रोत्साहित करना। शंका पूछने का मौका देना जिससे कहानियों के प्रति उत्साहवर्धक पढ़नेवाला समूह तैयार होगा उदा- एक कहानी में लिखा था कि हरिदास एक लम्बे अरसे से देख रहा था कि-। एक बच्चे ने पूछा अरसा मतलब आइना क्या? मैंने कहानी का प्रसंग फिर सुनाकर कहा सोचो क्या अर्थ होगा। तब हाँ! दीर्घकाल यह अर्थ लगता है ऐसा कहा गया।

<u>शब्दकोष बनवाना</u>- पुरानी कॉपी के पन्नों को फाड़ कर बीच से मोड़कर, सीकर उसपर आकर्षक मुख-पृष्ठ लगाकर सजाने कहा फिर उसमें कहानियों के आए शब्द ढूँढकर उसे इंग्रजी, मराठी में अनुवाद कुछ ने समानार्थी तो कुछ ने विरूद्धार्थी शब्द लिखे

पहेली करने कही कुछ विषय से संबंधित पहेली पूछी जैसे -

" पंख नही पर उड़ती हूँ, उड़-उड़ ऊपर जाती हूँ।
हाथ नही पर लड़ती हूँ, लड़-लड़कर गिरती, गिराती हूँ॥

खेल कार्ड बनाए समानार्थी, विरूद्धार्थी आसानी से खेल - खेल में सीखे।

कार्यवाही के टप्पे -

मेरी पाठशाला में कक्षा छठी के लिए ४५ मिनट (कालांश) घंटा मिलता है सप्ताह मे ४ दिन। इसलिए उपक्रम के लिए कभी २ घंटे तो कभी शनिवार को आधे दिन की पाठशाला छूटने पर रूककर १/२ घंटा बच्चों के साथ काम किया। ग्रंथालय के घंटे में ग्रंथपाल को बताकर एक महीना हिंदी की किताबें ज्यादा इश्यू कराने के बारें में सहमति ली।

उपक्रम की समय-सारणी :

यह उपक्रम शैक्षणिक वर्ष २००७-०८ के प्रथम सत्र में लिया। इसके लिए २ महीने की कालावधी लगी। १० अगस्त से १० अक्टूबर।

१०-८-०७ से २६-८-०७ → विद्यार्थियों से चर्चा, नियोजन, कहानी सुनाना

२७ से ५-९-०७ → कहानी पढ़ने के लिए देना, सुनाने
कहना, चर्चा

६-९-०७ से १५-९-०७ → शब्दकोष के लिए शब्द
हिंदी दिन पर नाटक करना

१६- से १०-१०-०७ → सबके सामने कहानी प्रस्तुतीकरण,
परीक्षण, चर्चा

'हिंदी दिवस' के अवसर पर २ घंटे के कार्यक्रम में कहानी सुनाई, नाटक, चुटकूले, पहेली का प्रस्तुतीकरण किया। उपरोक्त कालावधि में शालेय समय-सारणी अनुसार सप्ताह में ४ दिन ४५ मिनट के घंटे मिले। शनिवार के दिन आधे घंटे की पाठशाला छूटने पर कभी-कभी ½ घंटा रूककर शब्दकोष का काम, नाटक की प्रॅक्टिस, पहनावा आदि पर चर्चा की इस कालांतर में वार्षिक नियोजन में दर्शाएँ अनुसार पाठ्यक्रम भी लिया।

अगस्त से अक्टूबर १० तक ३० घंटे मिले. जिसमें

से १५ घंटे इस उपक्रम के लिए रखे और शनिवार का १/२ घंटा अधूरा काम पूरा करने के लिए।

कहानियाँ सुनाने - ४ घंटे

चर्चा करने, कहानी पढ़वाने के लिए - ४ घंटे

नाटक पर काम - २ घंटे, शनिवार का १/२ घंटा

शब्दकोष बनाने - २ घंटे, " "

खेलकार्ड, पुस्तकालय - २ घंटे

परीक्षण (Test), मौखिक परीक्षण भी - १ घंटा

<u>उपक्रम का नियोजन और शिक्षक कृती -</u>

१ इस उपक्रम के लिए पाठशाला की मुख्याध्यापिका की अनुमति ली।

। संबंधित शिक्षको से चर्चा की।

। छठी के विद्यार्थियों की इस उपक्रम के लिए मानसिक तैयारी की।

। ग्रंथपाल से मदद लेना लगनेवाली संभाव्य किताबों के बारें में सहमति ली।

५ नवोपक्रम का नियोजन करना।

६ प्रोत्साहनपर शब्दों से बच्चों का उत्साह बढ़ाना, प्रशंसा करना।

७ उपक्रम की गतिविधियाँ चालू रहते समय विद्यार्थी शोर न मचाएँ, दूसरों को परेशानी न हो इस ओर सचेत रहना।

८ किताबों का सावधानी से योग्य तरीके से उपयोग

९. प्रस्तुती के समय योग्य निर्देश देना -

१० हस्तपुस्तिका, शब्दकोष बनाते समय मार्गदर्शन करना

विद्यार्थीकृती

१. अपने उपक्रम को समझकर उसपर विचार

२. चर्चा करना

३. कठिनाईयाँ आने पर पूछना

४. समूह में रहकर अपनी जिम्मेदारी अच्छे से निभाना

५. अभिभावकों से प्रगति, गतिविधियों के बारे में चर्चा

६ समय पर अपना काम पूरा करना।

कार्यवाही में आयी समस्या कौन-सी ? निवारण

छठी कक्षा के ज्यादा बच्चें खुप चंचल है और ज्यादातर धाराप्रवाह हिंदी नही बोल पाते थे। उन पर ज्यादा सतर्कता से काम करना पड़ा। ४-५ बच्चे तो शब्दकोष लिखते समय बहुत ही धीरे-धीरे लिख रहे थे बार-बार (शुरू में) उन्हें निर्देश देना होता था। नाटक की प्रॅक्टिस के समय जिन्हे नाटक में भूमिका नही मिली उन्हें दूसरा नाटक लिखने कहा ताकि उन्हें भी अभिनय दे। या फिर चुटकुले को प्रसंग सहित अभिनित करने का अभ्यास करने कहा। या फिर नाटक करते समय निरीक्षण कर कमियाँ या बदल बताने कहा।

बच्चों को एक के बाद एक ऐसी गतिविधियाँ देनी पड़ी ताकि वे उसमें जुटे रहे। और आनंदीत भी। इस तरह नियोजन से बिना रूकावट काम होते गए।

व्याप्ती, मर्यादा और मूल्यांकन-

१. सातारा जिले के फलटण तहसील की प्रायोगिक पाठशाला 'कमला निंबकर बालभवन' इस शाला के कक्षा छठी के ३२ विद्यार्थी लिए।

२. नवोपक्रम के लिए 'हिंदी की कहानियाँ-२०

३. एक परीक्षण परीक्षा ली। शब्दकोष बनवाया

४. चर्चात्मक, नाट्यीकरण सबके सामने प्रस्तुतीकरण

५ हिंदी भाषायी कौशल (श्रवण, लेखन, वाचन) बढ़ाने के लिए मनोरंजनात्मक रूप से अन्य दूसरी कहानियाँ सुनाकर, कभी-कभी कहानी पढ़ने कहकर और कभी मजे-मजे में कि बच्चों तुम्हारें (४ बच्चों का समूह) समूह को ४-४ किताबें जो छोटी-छोटी कहानियों की थी दे रही हूँ। इसमें से जो किताब अच्छी लगे उसे समूह में सबने मिलकर पढ़ना, चर्चा करना और मेरे दिए २-३ प्रश्नों को लिखकर देना है देखे तुम्हें कौन-सी

कहानी पसंद आती है? इस तरह से काम कराया। शब्दकोष बनाने समय तो वे स्वयंस्फूर्ति से सुंदर तरीके से जिम्मेदारीपूर्ण काम कर रहे थे नवनिर्मिति का आनंद उन सबके चेहरें के क्रियाकलाप से दिख रहा था।

समूह में काम करने स आत्मविश्वास, मदद की वृत्ती, अनुशासन और जानकारी बढ़ी। अपना काम पूरा होना ही चाहिए नही तो समूह का काम पीछे पडेगा यह वृत्ती थी। नाटक, शब्दकोष के समय बच्चों के सुप्तगुण पता चले। कहानियाँ विशेषकर हिंदी की पढ़कर संक्षेप में हिंदी में ही सुनाने का अच्छा प्रयास जारी है। कविता को कहानी रूप में लिखो या कहानी की २ पंक्तियाँ देकर उसे पूरी कराई तब दिखाई दिया कि कल्पना शक्ति, लेखन क्षमता बढी है। आपस में स्वयं एकाद समस्या का हल निकालने लगे। उत्साही थे।

पाठशाला में ६० फीसदी से ज्यादा बच्चें गरीब, पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति, जनजाती आदि वर्ग से (मिलाकर) है। इसलिए पढाई की तैयारी शिक्षकों द्वारा ली जाती है।

इस उपक्रम में बच्चों को इस तरह हिंदी भाषा में सुधार का मौका ऊबाऊ न लेकर आनंददायी लगा। छःमाही परीक्षा में १० गुणों की लिखित परीक्षा इसी उपक्रम के तहत प्रश्न पूछकर जिसमें कल्पनाशक्ति, कक्षा में सुनाई कहानी व जानकारी के आधार पर थी। उसमें ९५ फीसदी बच्चों को ८० से ९९% के बीच गुण थे। और उपक्रम में परीक्षण परीक्षा में भी आठों समूह की ली परीक्षा में ७५% से ९५% तक का औसत प्रतिशत था। साथ ही सभी का शब्दकोष तारीफ-ए-काबिल था। उसका भी अंको में मूल्यांकन करना अनुचित होगा क्योंकि इस उपक्रम द्वारा बच्चों में निहीत

क्षमताओं का विकास करना और मौका देना यह मेरे लिए महत्वपूर्ण था। और उत्साही बच्चों की सक्रियता, सक्रिय अभिकर्त्ता (active agent) बनना इस उपक्रम की सबसे बड़ी उपलब्धी है।